चतुर्थ श्रेणी

कर्मचारी भर्ती परीक्षा

ब्रह्मास्त्र

हिन्दी

अंकित सर
(वरिष्ठ अध्यापक)

पढ़ें वही, जो Examiner पूछे

रोहित सर

हिन्दी ब्रह्मास्त्र

सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए रामबाण पुस्तक

Apni Padhai Publication

Apni Padhai Publication

सिद्वमुख मोड, राजगढ (चूरू)

© प्रकाशकाधीन

- Apni Padhai

- Apni Padhai

- 7568716768

मूल्य - ₹ 90 /-

इस पुस्तक के किसी भी भाग को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना छापना या किसी इलेक्ट्रोनिक माध्यम से फोटोकॉपी, PDF, रिकॉर्डिंग या अन्य किसी विधि से वितरण नहीं किया जा सकता है, इसके सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित है

इस पुस्तक को तैयार करने में पूर्ण सावधानी बरती गई है पुस्तक में दिये गये तथ्य व विवरण उचित व विश्वसनीय स्रोतों से प्राप्त किये गये हैं, फिर भी इसमें किसी प्रकार की त्रुटि, गलती, कमी के लिए लेखक, प्रकाशक, सम्पादक, मुद्रक, विक्रेता जिम्मेदार नहीं होगे। आप उक्त शर्ते मानते हुए ही यह पुस्तक खरीद रहे है

भूमिका

प्रिय विद्यार्थियों,

आपकी अटूट जिज्ञासा, निरंतर उत्साह और विश्वास ने ही "हिन्दी ब्रह्मास्त्र" पुस्तक को आपके हाथों तक पहुँचाया है। हम आप सभी का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं, क्योंकि आपकी सीखने की ललक ही हमारे प्रयासों की सबसे बड़ी प्रेरणा रही है।

यह पुस्तक विशेष रूप से प्रतियोगी परीक्षाओं की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई है। हमने विषय–वस्तु को संक्षिप्त, सहज और परीक्षा केंद्रित नोट्स के रूप में प्रस्तुत किया है, जिससे न केवल अध्ययन सरल हो, बल्कि स्मरण भी स्थायी रहे। हमारा प्रयास रहा है कि आप कम समय में अधिकतम ज्ञान अर्जित कर सकें और आत्मविश्वास के साथ परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करें।

"हिन्दी ब्रह्मास्त्र" केवल एक पुस्तक नहीं, बल्कि आपकी सफलता की यात्रा का सशक्त साथी है। इसमें सम्मिलित प्रत्येक तथ्य, उदाहरण और संक्षिप्त व्याख्या आपकी जिज्ञासा को और अधिक प्रखर बनाएगी तथा आपकी तैयारी को नई दिशा देगी। हमने स्पष्टता, प्रासंगिकता और नवीनतम परीक्षा पैटर्न का विशेष ध्यान रखा है, ताकि आप हर चुनौती का सामना सहजता से कर सकें।

जैसे–जैसे आप इस पुस्तक के पृष्ठों में आगे बढ़ेंगे, आपको न केवल वांछित ज्ञान मिलेगा, बल्कि यह भी महसूस होगा कि आपकी मेहनत और हमारी टीम की सामूहिक प्रतिबद्धता ने मिलकर इस पुस्तक को अद्वितीय बनाया है। यह पुस्तक आपके सपनों को साकार करने की दिशा में एक मजबूत आधारशिला सिद्ध होगी।

हम ईश्वर के प्रति कृतज्ञ हैं, जिन्होंने हमें यह कार्य करने की शक्ति और संकल्प दिया। साथ ही, हम अपने सहयोगी श्री अंकित सर (वरिष्ठ अध्यापक) और श्री A K सर (रेलवे) का विशेष आभार प्रकट करते हैं जिनके अथक परिश्रम और मार्गदर्शन से पुस्तक का प्रकाशन संभव हो पाया।

आप सभी को उज्ज्वल भविष्य, सफलता और ज्ञान की अनंत ऊँचाइयों की हार्दिक शुभकामनाएँ!

सादर,

(प्रकाशक, अपनी पढ़ाई टीम)

INDEX

संज्ञा	1 - 3
सर्वनाम	4 - 5
क्रिया	6 - 8
विशेषण	9 - 11
तत्सम, तद्भव, देशज एवं विदेशी शब्द	12 - 15
संधि	16 - 20
उपसर्ग	21 - 25
प्रत्यय	26 - 29
पर्यायवाची शब्द	30 - 33
विलोम शब्द	34 - 36
वाक्यांश के लिए एक शब्द	37 - 41
शब्द-शुद्धि	42 - 45
वाक्य शुद्धि	46 - 52
काल	53 - 54
मुहावरे	55 - 58
लोकोक्तियाँ	59 - 62
पारिभाषिक शब्दावली	63 - 66
पत्र लेखन	67 - 71

संज्ञा

- वे शब्द जिनका रूप – लिंग, वचन, कारक और काल के अनुसार बदल जाता है, विकारी शब्द कहलाते हैं।
- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण व क्रिया विकारी शब्द हैं।

● **संज्ञा की परिभाषा** – किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, भाव, अवस्था, गुण, या दशा के नाम को संज्ञा कहते हैं।

- साधारण शब्दों में नाम को ही संज्ञा कहते हैं।
  जैसे– पुस्तक, प्रकृति, गौरव, दया, कृपा मिठास, गरीबी

❖ संज्ञा के प्रकार –

- संज्ञा मुख्यतः तीन प्रकार की होती है –

(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा
(2) जातिवाचक संज्ञा
(3) भाववाचक संज्ञा

(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा –

- व्यक्ति विशेष, वस्तु विशेष अथवा स्थान विशेष के नाम को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।
- व्यक्तिवाचक संज्ञा, 'विशेष' का बोध कराती है 'सामान्य' का नहीं अर्थात् यह संज्ञा किसी एक व्यक्ति, एक वस्तु या एक स्थान का बोध कराती है।

- **व्यक्ति विशेष** – नवीन, सुरेश, कविता, अभिषेक
- **वस्तु विशेष** – रामायण, ऊषापंखा, रीटामशीन, कामायनी
- **स्थान विशेष** – रतनगढ़, गंगा, ताजमहल, हिमालय

(2) जातिवाचक संज्ञा –

- इस संज्ञा में किसी प्राणी, वस्तु अथवा स्थान की जाति या पूरे वर्ग (समूह) का बोध होता है

- **प्राणी** – मनुष्य, लड़की, घोड़ा, सेना, सभा, कृषक
- **वस्तु** – पुस्तक, पंखा, मशीन, साबुन
- **स्थान** – पहाड़, नदी, भवन, शहर, गाँव, विद्यालय

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा
नवीन, कविता	मनुष्य
रामायण, कामायनी	पुस्तक
ऊषा पंखा	पंखा
हिमालय, अरावली	पर्वत

● **जातिवाचक संख्या के दो उपभेद हैं** –

(i) **द्रव्यवाचक संज्ञा** – सोना, तेल, तेजाब, दूध, चाँदी, घी
(ii) **समूहवाचक संज्ञा**– मंडल, कुंज, गुच्छा, गिरोह, परिवार, पुलिस, दल, सेना, सभा, समिति, घौद आदि।

❖ व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का जातिवाचक संज्ञा में प्रयोग –

(i) व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का प्रयोग जब बहुवचन में हो तो व्यक्तिवाचक संज्ञाए ही जातिवाचक संज्ञाएँ बन जाती हैं

- हरिश्चन्द्रों की सत्यता से ही भारत का सम्मान बचा हुआ है।
- हमारे देश में रावणों की कमी नहीं है।
- देश को हरिश्चंद्रों की आवश्यकता है।
- जयचंदो के कारण देश गुलाम हुआ।
- हमारा देश सीता–सावित्रियों का देश है।
- भारत में भगतसिंहों की कमी नहीं है।
- देश को नटवरलालों ने तरह–तरह से ठगा है।

(ii) कभी–कभी कुछ व्यक्तियों में कोई विशेष गुण, अवगुण होता है, जिसके कारण उनका नाम उसी विशेष गुण या अवगुण का प्रतिनिधित्व करने लग जाता है इसलिए वह नाम व्यक्ति–विशेष होते हुए भी जातिवाचक बन जाता है।

- तुम कलियुग के भीम हो।
- तुम तो कुम्भकरण बन गए हो।
  (ज्यादा नींद लेने वालों का प्रतीक)
- यशोदा हमारे घर की लक्ष्मी है।
- गाँधीजी अपने समय के कृष्ण थे।
- सुमन तो लता मंगेशकर है।
- कालिदास को नाट्यजगत् का शेक्सपीयर माना जाता है

(उपर्युक्त उदाहरणों में भीम, लक्ष्मी, कृष्ण, कुम्भकरण, लतामंगेशकर, शेक्सपीयर, इत्यादि व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का प्रयोग जातिवाचक संज्ञा के रूप में हुआ है।)

सर्वनाम

- संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द – सर्वनाम
- 'सर्वनाम' उस विकारी शब्द को कहते हैं, जो पूर्वापर संबंध से किसी भी संज्ञा के बदले आता है।
- सब (सर्व) नामों (संज्ञाओं) के बदले आने वाले शब्द – सर्वनाम।
- भाषा में सुन्दरता, संक्षिप्तता एवं पुनरुक्ति दोष से बचने के लिए सर्वनाम का प्रयोग होता है।
- सर्वनाम का शाब्दिक अर्थ – 'सब का नाम'

● **हिंदी में कुल ग्यारह सर्वनाम हैं –** मैं, तू , आप, यह, वह, जो, सो, कोई, कुछ, कौन, क्या।

● **प्रयोग के अनुसार सर्वनाम के भेद –** छह:

1. पुरुषवाचक **2. प्रश्नवाचक** **3. अनिश्चयवाचक**
4. निश्चयात्मक **5. सम्बन्धवाचक** **6. निजवाचक**

(1) पुरुषवाचक सर्वनाम –

- स्त्री या पुरुष के नाम के स्थान पर जिन सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है। वे पुरुषवाचक सर्वनाम होते हैं।

● **पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद होते हैं –**

(अ) उत्तमपुरुषवाचक सर्वनाम।
(ब) मध्यमपुरुषवाचक सर्वनाम।
(स) अन्यपुरुषवाचक सर्वनाम।

(अ) उत्तमपुरुषवाचक सर्वनाम – वक्ता (बोलने वाला) या लेखक जिन सर्वनामों का प्रयोग अपने नाम के स्थान पर करता है, वे उत्तमपुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

◆ **जैसे –** मैं, मेरा, मुझे, मुझको, मुझसे, मेरे द्वारा, मेरे लिए, मेरी मुझ पर (एकवचन)
– हम, हमने, हमको, हमारा, हमसे, हमारी, हमें, हमारे (बहुवचन)

◆ **उदाहरण –**

1. मैं खेलना चाहता हूँ।
2. हमें सत्य बोलना चाहिए।

(ब) मध्यमपुरुषवाचक सर्वनाम – सुनने वाले या पाठक के नाम के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम को मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम कहते हैं।

◆ **जैसे –** तू, तेरा, तुझे, तुझसे, तुझको (एकवचन)
– तुम, तुम्हारा, तुमको, तुमसे, तुमने (बहुवचन)
– आप (एकवचन)
– आप सब, आप लोग (बहुवचन)

◆ **उदाहरण –**

1. तुम्हारा शहर आबाद है।
2. हे! ईश्वर तू दया करना।

नोट – आप सर्वनाम का प्रयोग आदर सम्मान के रूप में मध्यमपुरुषवाचक सर्वनाम में किया जाता है।

- आप गाँव से कब आए ?
- आप आगे आ जाएँ।
- आप बीमार हो गए थे ?
- आपको भी सूचित कर दें।
- ऐसे समय में आप साथ नही दोगे तो और कौन देगा ?
- आपको यही उचित लगता है, तो ठीक है।
- यह बात आप ही कह दीजिए।
- इस विषय में आपकी क्या राय है ?
- आप यहाँ बैठिए।
- आपने तो कमाल कर दिया।
- तुम दिल्ली से कब आये ?
- आप बहुत अच्छा गाते हैं।
- आप कहेंगे तो ही बैठूँगा।

(स) अन्यपुरुषवाचक सर्वनाम –

- इस सर्वनाम को प्रथमपुरुष भी कहते हैं।
- इसमें यह, ये, वह, वे, उसे, इन्हें, उन्हें आदि सर्वनाम आते है।

◆ **उदाहरण –**

1. यह खेल रहा है। 2. ये पढ़ रहे हैं। 3. उन्हें कह देना।

◆ यह (ये), वह (वे), "अन्यपुरुषवाचक सर्वनाम" भी कहलाते हैं और निश्चयवाचक सर्वनाम भी कहलाते हैं। जब 'ये' व्यक्ति के बारे में आते है तो अन्यपुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते है

क्रिया

- क्रिया का अर्थ – करना ।
- जिस शब्द से किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं।
- क्रिया के बिना कोई वाक्य पूर्ण नहीं होता।
- किसी वाक्य में कर्ता, कर्म तथा काल की जानकारी भी क्रिया पद के माध्यम से ही होती है।
- संस्कृत में क्रिया रूप को धातु कहते हैं, हिंदी में उन्हीं के साथ 'ना' लग जाता है।
- **जैसे** - लिख से लिखना, हँस से हँसना।
- धातु में विकार होने से क्रिया निर्मित होती है।

❖ क्रिया के भेद -

(क) कर्म के आधार पर - 2 प्रकार

(1) सकर्मक क्रिया -

(i) एक कर्मक (ii) द्विकर्मक

(2) अकर्मक क्रिया -

(ख) संरचना के आधार पर - 5 प्रकार

(1) संयुक्त क्रिया
(2) नामधातु क्रिया
(3) प्रेरणार्थक क्रिया
(4) पूर्णकालिक क्रिया
(5) कृदन्त क्रिया

(ग) काल के आधार पर - 3 प्रकार

(1) भूतकालिक क्रिया
(2) वर्तमान कालिक क्रिया
(3) भविष्यत् कालिक क्रिया

(क) कर्म के आधार पर क्रिया के भेद -

(1) सकर्मक क्रिया - जिस क्रिया का व्यापार कर्म को प्रभावित करता है अर्थात् जिस क्रिया का फल कर्ता को छोड़कर कर्म पर पड़े वह सकर्मक क्रिया कहलाती है।

स = साथ कर्मक = कर्म

◆ उदाहरण -

- लड़का चित्र बना रहा था।
- मनीषा बाजा बजा रही है।
- नीलम दूध पी रही है।
- नीतू खाना बना रही है।
- सतीश ने केले खरीदे।
- गगन आम खाता है।
- उसने आम खाया।
- राम पुस्तक पढ़ता है।
- टैगोर ने गीतांजलि लिखी।
- बच्चा फल तोड़ रहा है।
- मोहन ने अविनाश को पढ़ाया।
- बच्चे पतंग उड़ा रहे हैं।
- किसान फसल काट रहा था।
- मजदूर चाय पी रहे हैं।
- वह पतंग उड़ा रहा है।
- नौकर पानी भरता है।
- वह फुटबाल खेल रहा है।
- बच्चे फिल्म देख रहे है।
- मनीषा ने कार खरीदी।
- उसने कृष्ण को बुलाया।
- रमेश भोजन कर रहा है।
- मदारी भालू को नचाता है।
- माँ पुत्र को समझाती है।
- माँ बच्चे को सुलाती है।

(नोट – सोती है – अकर्मक क्रिया है)

● सकर्मक क्रिया के दो भेद हैं -

(i) एक कर्मक - क्रिया के साथ एक कर्म प्रयुक्त होता है

◆ उदाहरण -

- माँ अखबार पढ़ रही है।
- सीता भोजन बना रही है।
- बंदर केला खाता है।
- चंदन ने सब्जी खरीदी।
- डाकिया चिट्ठी लाया।

विशेषण

❖ विशेषण –

- जो विकारी शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहा जाता है।
- जिस विकारी शब्द से संज्ञा की व्याप्ति मर्यादित / संयमित होती है, उसे विशेषण कहते हैं।

❖ विशेष्य –

- जिस संज्ञा या सर्वनाम पद की विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहा जाता है।
- अंजना (↓ विशेष्य) सुंदर (↓ विशेषण) है
- सेब (↓ विशेष्य) मीठा (↓ विशेषण) है

❖ प्रविशेषण –

- ये शब्द विशेषण की विशेषता बतलाते हैं।
- ये विशेषण को और स्पष्ट कर देते हैं।
- सेब (↓ विशेष्य) अत्यंत (↓ प्रविशेषण) मीठा (↓ विशेषण) है।

❖ उद्देश्य विशेषण –

- जब वाक्य में विशेष्य से पहले विशेषण हो तो वे उद्देश्य विशेषण कहलाते हैं।
- जैसे – चालाक महिला
  – कीमती जूते
- नदी का मीठा पानी है।
  (यहाँ विशेष्य से पहले विशेषण है)

❖ विधेय विशेषण –

- जब वाक्य में विशेष्य के बाद विशेषण आए तो उसे विधेय विशेषण कहा जाता है।
- नदी का पानी मीठा है।
  (यहाँ विशेष्य के बाद विशेषण है)
- रोहित होशियार है।

❖ विशेषण के प्रकार - 5

(1) गुणवाचक विशेषण (2) संख्यावाचक विशेषण
(3) परिमाणवाचक विशेषण (4) व्यक्तिवाचक विशेषण
(5) सार्वनामिक विशेषण/संकेत वाचक विशेषण

(1) गुणवाचक विशेषण –

- जिस विशेषण के माध्यम से किसी संज्ञा या सर्वनाम के गुण–दोष, आकार–प्रकार, रंग–रूप अवस्था–स्थिति, काल, स्थान, दिशा आदि का बोध हो, उसे गुणवाचक विशेषण कहा जाता है।

- **काल** – नया, पुराना, ताजा, भूत, वर्तमान, भविष्य, प्राचीन, अगला, पिछला, मौसमी, आगामी, टिकाऊ, बासी, नवीन
- **स्थान** – भीतरी, बाहरी, ऊपरी, दायाँ, बायाँ, सतही, पूरबी, स्थानीय, देशीय, क्षेत्रीय, जोधपुरी, ग्रामीण, बाजारू, घेरलू, विदेशी, जंगली, ऊँचा, नीचा, लंबा, देशी
- **आकार** – सीधा, टेढ़ा, गोल, चौकोर, सुंदर, सुडौल, समान, नुकीला, लंबा, चौड़ा, तिरछा
- **रंग** – लाल, पीला, सुनहरा, चमकीला, धुँधला, फीका
- **दशा** – दुबला, मोटा, पतला, हल्का, भारी, गाढ़ा, सुखा, गरीब, धनवान, उद्यमी, पालतू, रोगी, पिघला
- **गुण** – भला, बुरा, उचित, अनुचित, सच्चा, झूठा, पापी, दानी, न्यायी, दुष्ट, सीधा, शांत

(2) संख्यावाचक विशेषण –

- जिस विशेषण से संज्ञा, सर्वनाम की संख्या का बोध हो।
- **संख्यावाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं –**

(i) निश्चित संख्यावाचक विशेषण –

(क) गणनावाचक विशेषण – एक, दो, तीन
(ख) क्रमवाचक विशेषण – पहला, दूसरा
(ग) आवृतिवाचक विशेषण – दुगुना, चौगुना
(घ) समुदाय वाचक विशेषण – दोनों, तीनों, चारों
(ड़) प्रत्येक बोधक विशेषण – प्रत्येक, हर एक, दो–दो, एक–एक, सवा–सवा

तत्सम - तद्भव
देशज - विदेशी

✍ हिन्दी भाषा के शब्दों को विकास (उत्पत्ति) के आधार पर चार वर्गों मे विभाजित किया जाता है –

(1) तत्सम्　　(2) तद्भव
(3) देशज एवं देशी　　(4) विदेशी

(i) तत्सम – तत् + सम का अर्थ है – उसके समान। अर्थात् किसी भाषा में प्रयुक्त उसकी मूल भाषा के शब्दों को तत्सम कहते हैं। हिन्दी की मूल भाषा संस्कृत है। अतः संस्कृत के वे शब्द जो हिन्दी में ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते हैं, उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं।

(ii) तद्भव शब्द – संस्कृत भाषा के वे शब्द, जिनका हिन्दी में रूप परिवर्तित कर, उच्चारण की सुविधानुसार प्रयुक्त किया जाने लगा, उन्हें तद्भव शब्द कहते हैं।

तत्सम	तद्भव
आश्चर्य	अचरज
अमावस्या	अमावस
अक्षर	आखर
अमूल्य	अमोल
अंगुष्ट	अँगूठा
कर्म	काम
कदली	केला
अर्द्ध	आधा
अश्रु	आँसू
कपोत	कबूतर
अग्नि	आग
कार्य	काज
कार्तिक	कातिक
अमृत	अमिय
कास	खाँसी
आम्र	आम
कुम्भकार	कुम्हार
कोकिल	कोयल
कृष्ण	किसन / कान्हा
अश्विन	आसोज
कंकण	कंगन
आलस्य	आलस
कच्छप	कछुआ
क्लेश	कलेस
आश्रय	आसरा
कज्जल	काजल
कर्ण	कान
कर्त्तरी	कैंची
गर्त	गड्ढा
इक्षु	ईख
उलूक	उल्लू
क्षीर	खीर
एला	इलायची
क्षेत्र	खेत
ग्रंथि	गाँठ
गायक	गवैया
कपाट	किवाड़
ग्रामीण	गँवार
कण्टक	काँटा
गोस्वामी	गुसाई
काष्ठ	काठ
गृह	घर
काक	काग / कौवा / कौआ
कुकुर	कुत्ता
कुपुत्र	कपूत
ग्राम	गाँव
गम्भीर	गहरा
गोपालक	ग्वाला
गोधूम	गेहूँ
घट	घड़ा
घटिका	घड़ी
ताम्र	ताम्बा
घृत	घी
तीर्थ	तीरथ
त्वरित	तुरन्त
चन्द्र	चाँद
दधि	दही
चित्रकार	चितेरा
दन्त	दाँत
दीपश्लाका	दीयासलाई
छत्र	छाता
दीपावली	दीवाली
दुर्बल	दुबला
चन्द्रिका	चाँदनी
द्विपट	दुपट्टा
दूर्वा	दूब
चंचु	चोंच
देव	दई / दैव
चित्रक	चीता
धरणी / धरित्री	धरती
छाया	छाँह
धैर्य	धीरज
ज्योति	जोत / जोति
जिह्वा	जीभ
नग्न	नंगा
जंघा	जाँघ
ज्येष्ठ	जेठ
नक्षत्र	नखत
जीर्ण	झीना
झरण	झरना

संधि

✍ संधि का शाब्दिक अर्थ है – योग अथवा मेल अर्थात् दो ध्वनियां या दो वर्णों के मेल के होने वाले विकार को ही संधि कहते हैं।

- **परिभाषा** – जब दो वर्ण पास–पास आते हैं या मिलते हैं तो उनमें विकार उत्पन्न होता हैं अर्थात् वर्ण में परिवर्तन हो जाता हैं यह विकास युक्त मेल ही संधि कहलाता हैं।
- **कामताप्रसाद गुरु के अनुसार** – 'दो निर्दिष्ट अक्षरों के आस–पास आनें कारण उनके मेल से जो विकार होता है, उसे संधि कहते हैं।'
- **सन्धि–विच्छेद** – वर्णों के मेल से उत्पन्न ध्वनि परिवर्तन को ही संधि कहते हैं। परिणाम स्वरूप उच्चारण एवं लेखन दोनों ही स्तरों पर अपने मूल रूप से भिन्नता आ जाती है। अतः उन शब्दों को पुनः मूल रूप में लाना ही संधि विच्छेद कहलाता हैं।

संधि के भेद

स्वर संधि | व्यंजन संधि | विसर्ग संधि

(1) **स्वर संधि** – प्रथम पद का अन्तिम वर्ण तथा अन्तिम पद का प्रथम वर्ण यदि स्वर हो, तो स्वर में जो विकार होता हैं, उसी का नाम 'स्वर संधि' है।

स्वर संधि के पाँच भेद हैं –

(i) दीर्घ (ii) गुण (iii) वृद्धि (iv) यण् (v) अयादि

(i) दीर्घ स्वर संधि –

● दीर्घ स्वर संधि के नियम –

- अ / आ + अ / आ = आ
- इ / ई + इ / ई = ई
- उ / ऊ + उ / ऊ = ऊ
- ऋ + ऋ = ॠ

● दीर्घ स्वर–संधि के उदाहरण –

- स्व + अधीन = स्वाधीन
- कंटक + आकीर्ण = कंटकाकीर्ण
- चन्द्र + अर्क = चन्द्रार्क
- कार्य + आलय = कार्यालय
- दैत्य + अरि = दैत्यारि
- बडवा + अनल = बडवानल
- कल्प + अंत = कल्पांत
- तथा + अपि = तथापि
- भाव + आविष्ट = भावाविष्ट
- विद्या + अर्थी = विद्यार्थी
- भय + आक्रांत = भयाक्रांत
- कदा + अपि = कदापि
- विवाद + आस्पद = विवादास्पद
- वार्ता + आलप = वार्तालाप
- महा + आशय = महाशय
- महा + अमात्य = महामात्य
- स + आकार = साकार
- विद्या + आलय = विद्यालय
- रेखा + अंकन = रेखाकंन
- सत्य + आग्रह = सत्याग्रह
- हिम + आलय = हिमालय
- पर + अर्थ = परार्थ
- स + अंग = सांग
- उत्तम + अंग = उत्तमांग
- अन्य + अन्य = अन्यान्य
- स + अवधान = सावधान
- स + अवयव = सावयव
- कंस + अरि = कंसारि
- मृग + अंक = मृगांक
- मृग + अरि = मृगारि
- शून्य + अशून्य = शून्याशून्य
- पूर्व + अंचल = पूर्वांचल
- दैत्य + अरि = दैत्यारि
- असुर + अरि = असुरारि
- एक + अंत = एकांत
- दिन + अंक = दिनांक
- वीर + अंगना = वीरांगना
- राम + अयन = रामायण
- देश + अटन = देशाटन
- तीर्थ + अटन (घूमना) = तीर्थाटन
- स + अवधि = सावधि
- दाव + अनल = दावानल
- स्व + अध्याय (अधि+आय)= स्वाध्याय
- स + अवधान = सावधान
- अधिक + अधिक = अधिकाधिक
- परम + अर्थ = परमार्थ
- वात + अयन = वातायन (झरोखा)
- अन्त्य + अक्षरी = अन्त्याक्षरी

उपसर्ग

- वे शब्दांश जो किसी मूल शब्द के पूर्व में लगकर नये शब्द का निर्माण करते हैं अर्थात् नये अर्थ का बोध कराते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं।
- ये शब्दांश होने के कारण इनका स्वतन्त्र रूप से अपना कोई महत्व नहीं होता किन्तु शब्द के पूर्व में लगकर उस शब्द के अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं।

● **हिन्दी में उपसर्ग तीन प्रकार के होते हैं –**

(i) संस्कृत उपसर्ग (ii) हिन्दी उपसर्ग (iii) विदेशी उपसर्ग

(1) संस्कृत उपसर्ग –

- संस्कृत में उपसर्गों की संख्या 22 होती है।
- ये उपसर्ग हिन्दी में भी प्रयुक्त होते हैं इसलिए इन्हें संस्कृत के उपसर्ग कहते हैं।

1. अति (अधिक / परे) –

- अतिशय, अतिक्रमण, अतिवृष्टि, अतिरिक्त
- अत्यन्त, अत्यधिक, अत्याचार, अतीव
- अतीन्द्रिय, अत्युक्ति, अत्युत्तम, अत्यावश्यक

2. अधि (प्रधान / श्रेष्ठ) –

- अधिकरण, अधिनियम, अधिनायक, अधित्यका,
- अधिकार, अधिमास, अध्यादेश(अधि+आ+देश),
- अधिकृत, अध्यक्ष, अधीक्षण, अधिपति, अधिकारी,
- अध्ययन,अधीक्षक, अध्यात्म, अध्यापक, अधीन

3. अनु (पीछे / समान) –

- अनुकरण, अनुकूल, अनुचर, अनुनाद, अन्वय,
- अनुज, अनुशासन, अनुरूप, अनुच्छेद, अनुज,
- अनुराग, अनुक्रम, अनुशंसा, अनुभव, अनुनय,
- अन्वीक्षण, अन्वेषण, अनुगमन, अनूदित,
- अनुमान, अनुरक्षक, अनुवादक

4. अप (बुरा / विपरीत) –

- अपकार, अपमान, अपयश, अपकर्ष, अपहरण,
- अपशब्द, अपकीर्ति, अपराध, अपव्यय, अपशकुन,
- अपेक्षा, अपादान, अपांग, अपेक्षित, अपशब्द
- अपंग, अपवाद, अपकीर्ति

5. अभि (पास / सामने) –

- अभिनव, अभिनय, अभिवादन, अभिषेक, अभिभूत
- अभिमान, अभिभाषण, अभियोग, अभिभावक
- अभ्युदय (अभि+उद्+अय), अभ्यर्थी, अभीष्ट
- अभ्यस्त, अभ्यन्तर, अभीप्सा, अभ्यास, अभियान
- अभ्यागत, अभिनय, अभिमान

6. अव (बुरा / हीन) –

- अवगुण, अवनति, अवधारण, अवलोकन, अवतार,
- अवज्ञा, अवगति, अवाप्ति, अवशेष, अवतरण,
- अवसर, अवकाश, अवगत, अवतरण, अवलम्ब
- अवलोकनीय

7. आ (तक / से) –

- आजन्म, आहार, आयात, आजीवन, आगार,
- आतप, आगम, आमोद, आशंका, आरक्षण, आहत
- आकर्षण, आबालवृद्ध, आघात, आमरण, आगमन
- आचार, आच्छादन, आनन्द, आरम्भ, आरोह
- आरोहण, आस्था, आलोचक, आवेदन, आवेदक

8. उत् (ऊपर/श्रेष्ठ) –

- उत्पन्न, उत्पत्ति, उत्पीड़न, उत्तम, उच्छ्वास,
- उत्कंठा, उत्कर्ष, उत्कृष्ट, उन्नत, उद्गम, उदय,
- उल्लेख, उद्धार, उज्ज्वल, उच्चारण, उच्छृंखल

9. उप (पास / सहायक) –

- उपकार, उपवन, उपनाम, उपयोग, उपभोग
- उपचार, उपहार, उपसर्ग, उपयुक्त, उपेक्षा,
- उपमंत्री, उपभेद, उपाधि, उपाध्यक्ष, उपस्थिति
- उपनिवेशित (उप+नि+वेशित), उपमान, उपयान,
- उपन्यास (उप+नि+आस)

प्रत्यय

- ✍ वे शब्दांश जो किसी शब्द के अन्त में लगकर उस शब्द के अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं, अर्थात् नये अर्थ का बोध कराते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं।
- ✍ प्रत्यय लगने पर शब्द एवं शब्दांश में सन्धि नहीं होती बल्कि शब्द के अन्तिम वर्ण में मिलने वाले प्रत्यय के स्वर की मात्रा लग जायेगी, व्यंजन होने पर वह यथावत रहता है।

● **उपसर्ग और प्रत्यय में समानता –**

- ✍ उपसर्ग और प्रत्यय दोनों ही शब्दांश (शब्दों के अंश) होते है, पूर्ण शब्द नहीं।
- ✍ दोनों के प्रयोग से ही अर्थ में अन्तर आता है।
- ✍ एक शब्द में इन दोनों को साथ भी जोड़ा जा सकता है।

● **हिन्दी में प्रत्यय मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं।**

(1) कृदन्त प्रत्यय (2) तद्धित प्रत्यय

(1) कृदन्त प्रत्यय –

- ✍ वे प्रत्यय जो धातुओं अर्थात् क्रिया पद के मूल रूप के साथ लगकर नये शब्द का निर्माण करते हैं कृदन्त या कृत प्रत्यय कहलाते हैं।

● **कृदन्त प्रत्यय पाँच प्रकार के होते हैं –**

(i) कर्तृवाचक प्रत्यय –

- **अक** – चालक, पालक, शिक्षक, निंदक, पाठक, मारक, गायक, पावक, कारक, लेखक, नायक।
- **तृच** – दातृ, कवयित्री, धात्री।
- **आऊ** – कमाऊ, चलाऊ, टिकाऊ, दिखाऊ, उपजाऊ, बुझाऊ, बिकाऊ।
- **आलू** – झगड़ालू, ईष्यालू।
- **आक** – तैराक, चालाक।
- **ऐया** – गवैया, खिवैया।
- **एरा** – कमेरा, लुटेरा, बसेरा
- **ऐत** – लठैत
- **ओड़ा** – भगोड़ा, हँसोड़ा।
- **अक्कड़** – कुदक्कड़, घुमक्कड़, पियक्कड़,भूलक्कड़
- **आकू** – पढ़ाकू, लड़ाकू।
- **हार / हारा** – होनहार, सिरजनहार, देखनहार, राखनहार , चाखनहार
- **वाला** – लिखने वाला, पढ़ने वाला, रखवाला, घरवाला।
- **आड़ी** – खिलाड़ी।
- **इयल** – अड़ियल, मरियल।
- **ता** – दाता, माता, गाता, नाता।
- **क** – रक्षक, भक्षक, पोषक, शोषक।
- **आरी** – भिखारी, जुआरी।

(ii) कर्मवाचक कृत् प्रत्यय –

- **औना** – खिलौना, बिछौना
- **नी** – सूँघनी, ओढ़नी, चटनी, छलनी, लेखनी, चलनी, करनी, भरनी, मथनी।
- **ना** – ओढ़ना, खाना, पढ़ना, लिखना, रटना।

(iii) करणवाचक कृत् प्रत्यय –

- **त्र** – पात्र, नेत्र
- **'ऊ'** – झाड़ू, चालू
- **ई** – बुहारी, रेती, फाँसी, खाँसी, धाँसी
- **आ** – झूला
- **ऊ** – झाड़ू
- **न** – बेलन
- **नी** – कतरनी, चटनी, सूँघनी

(iv) भाववाचक कृत् प्रत्यय –

- **आवट** – सजावट, तरावट, दिखावट, थकावट, मिलावट बनावट, रुकावट, लिखावट, गिरावट।
- **नी** – मिलनी
- **आई** – लड़ाई, चढ़ाई, सिलाई, पढ़ाई, कटाई, खुदाई, लिखाई, खिचांई।
- **आ** – उतारा, झटका, बैठा, फेरा, तोड़ा, रगड़ा, झगड़ा, छापा, जोड़ा, घेरा, पूजा
- **त** – बचत, खपत, बढ़त
- **आन** – उठान, लगान, उड़ान, चलान, थकान, मिलान, चढान।

पर्यायवाची

- **अंधकार** – तम, तिमिर, अँधेरा, ध्वांत, तमिस्र, तमस्, अँधियारा
- **अतिथि** – पाहुना, अभ्यागत, मेहमान, आगंतुक
- **अग्नि** – अनल, पावक, वह्नि, कृशानु, वैश्वानर, हुताशन, हुतभुक, ज्वाला, त्रिधामा, अरुण, लोहिताश्व, दव, आग, दहन, धनंजय, शिखी
- **अनाज** – अन्न, धान्य, शस्य, धान, गल्ला,दाना, खाद्यान्न
- **अर्जुन** – पार्थ, सव्यसाची, गाण्डीवधारी, गुडाकेश, धनंजय, कौन्तेय
- **अमृत** – पीयूष, सुधा, अमिय, सोम, सुरभोग, अमी, जीवन
- **कामदेव** – मदन, मकरध्वज, कंदर्प, प्रद्युम्न, काम, स्मर, पंचशर, मन्मथ, मनसिज, मार, रतिपति, पुष्पधन्वा, कुसुमशर
- **अनार** – दाड़िम, शुकोदन, शुकप्रिय, रामबीज
- **असुर** – दानव, राक्षस, निशाचर, दनुज, रजनीचर, तमचर, दैत्य, सुरारि
- **अश्व** – घोड़ा, तुरंग, तुरंगम, बाजी, हय, घोटक, सैंधव, वाजि
- **अभिजात** – कुलीन, संभ्रांत, योग्य, श्रेष्ठ, विशिष्ट
- **आँख** – नेत्र, नयन, चक्षु, दृग, लोचन, अक्षि, नजर, अक्ष, चश्म
- **आकाश** – नभ, अंबर, व्योम, अभ्र, दिव, शून्य, फलक, द्यु, गगन, अनंत, तारापथ, अंतरिक्ष, आसमान, खगोल, पुष्कर, रव
- **आत्मा** – चैतन्य, ब्रह्म, क्षेत्रज्ञ, विभु, जीव
- **आनंद** – प्रसन्नता, आह्लाद, उल्लास, मोद, प्रमोद, खुशी, सुख, मजा, लुत्फ, हर्ष
- **आभूषण** – अलंकार, भूषण, गहना, आभरण, जेवर
- **आंसू** – अश्रु, नयननीर
- **आयुष्मान** – चिरायु, चिरंजीव, दीर्घायु, शतायु, दीर्घजीवी
- **इच्छा** – अभिलाषा, आकांक्षा, कामना, चाह, लिप्सा, लालसा, अभीप्सा, ईप्सा, ईहा, स्पृहा, वांछा, मनोरथ, आरजू
- **इंद्र** – देवराज, सुरपति, मघवा, देवेश, सहस्राक्ष, विडौजा, पर्वतारि, पुरंदर, शक्र, देवेंद्र, शचीपति, वासव, सुरेश, बृत्रहा, अमरपति, सुरेन्द्र
- **इंद्राणी** – शची, इंद्रा, पुलोमजा,
- **इंद्रधनुष** – सुरधनु, सुरचाप, इंद्रचाप, सप्तवर्ण, शक्रचाप
- **ईर्ष्या** – जलन, डाह, द्वेष
- **ईश्वर** – जगदीश, प्रभु, भगवान, जगन्नाथ, परमात्मा, परमेश्वर, ब्रह्म, स्रष्टा, विभु, ईश
- **इष्ट** – वांछनीय, इच्छित, अभिप्रेत, अभीष्ट, मनोवांछित
- **उपवन** – बाग, बगीचा, उद्यान, वाटिका, गुलशन
- **ऊसर** – अनुर्वर, अनुपजाऊ
- **ऊँट** – क्रमेलक, उष्ट्र, लंबोष्ठ, महाग्रीव
- **उत्सव** – समारोह, पर्व, जश्न, जलसा, त्योहार।
- **कमल** – सरोज, जलज, पंकज, इंदीवर, नलिन, उत्पल, अंबुज, नीरज, राजीव, अरविंद, कंज, पुंडरीक, वारिज, सरसिज, तामरस, सारंग, शतपत्र, कोकनद, शतदल, पद्म, अब्ज, सरसीरुह
- **कनक** – कंचन, सोना, स्वर्ण, हिरण्य, हेम, हाटक
- **कपड़ा** – वस्त्र, चीर, वसन, अंबर, पट, दुकूल, परिधान, पोशाक
- **कल्पवृक्ष** – सुरतरु, पारिजात, देववृक्ष, कल्पतरु, मंदार, कल्पद्रुम, हरिचंदन
- **कबूतर** – कपोत, पारावत, रक्तलोचन, हारीत, परेवा, हारिल
- **आम** – आम्र, रसाल, सहकार, अमृतफल, अतिसौरभ

विलोम शब्द

- सामिष – निरामिष
- संयोग – वियोग
- सम्मुख – विमुख
- अनुकूल – प्रतिकूल
- अनुराग – विराग
- अग्रज – अनुज
- अन्त – आदि / अनन्त
- आदि – अनादि / अन्त
- असीम – ससीम
- अभिज्ञ – अनभिज्ञ
- अज्ञ – विज्ञ
- अल्पज्ञ – बहुज्ञ
- अपव्ययी – मितव्ययी
- आसक्त – अनासक्त
- अर्वाचीन – प्राचीन/पुराचीन
- नवीन – प्राचीन / आधुनिक
- अधम – उत्तम
- अन्तरंग – बहिरंग
- आभ्यन्तर – बाह्य
- अति – अल्प
- अधिक – न्यून
- अधः – ऊर्ध्व / उपरि
- अधिकृत – अनधिकृत
- अथ – इति
- अस्त – उदय
- अस्ताचल – उदयाचल
- अनाथ – सनाथ
- अर्पण – ग्रहण
- अर्पित – गृहित
- आहूत – अनाहूत
- आवृत्त – अनावृत्त
- अल्पायु – दीर्घायु/चिरायु
- आमिष/सामिष – निरामिष
- अज्ञेय – ज्ञेय
- अधित्यका – उपत्यका
- आज्ञा – अवज्ञा
- अधुना – पुरा
- अधुनातन – पुरातन
- अनुलोम – प्रतिलोम
- अतिवृष्टि – अनावृष्टि
- अमर – मर्त्य
- अवनति – उन्नति
- अवनत – उन्नत
- अपकार – उपकार
- आर्द्र – शुष्क
- आदर्श – यथार्थ
- अतल – वितल
- आकाश – पाताल / धरती
- आर्य – अनार्य
- आगत – अनागत
- आगम – लोप/निगम
- आगामी / विगत
- अग्र – पश्च
- आदृत – अनादृत
- आरोह – अवरोह
- आविर्भाव – तिरोभाव
- आस्तिक – नास्तिक
- अस्ति – नास्ति
- आशा – निराशा
- आलस्य – अनालस्य/स्फूर्ति
- आपत्ति – अनापत्ति
- अमृत – विष
- सुधा – गरल
- अनृत – ऋत
- आय – व्यय
- अनिवार्य – ऐच्छिक/निवार्य
- आकर्षण – विकर्षण
- अवतल – उत्तल
- आगमन – गमन/प्रस्थान/निगमन
- अपरिग्रह – परिग्रह
- अन्वय – अनन्वय
- आदान – प्रदान
- अन्धकार – प्रकाश
- तम – ज्योति
- आयात – निर्यात
- अनुरक्त – विरक्त
- आतप – अनातप/छाया
- अहिंसा – हिंसा
- असीम – ससीम
- अकर्मक – सकर्मक
- अपराधी – निरपराध
- आदर – अनादर /निरादर
- आजाद – गुलाम
- स्वतंत्र – परतन्त्र
- आजादी – गुलामी
- अपेक्षा – उपेक्षा
- अपेक्षित – उपेक्षित
- अवनी – अम्बर
- इहलोक – परलोक
- इष्ट – अनिष्ट
- इच्छा – अनिच्छा
- इहलौकिक – पारलौकिक
- ईप्सा – अनीप्सा
- ईप्सित – अनपीप्सित
- क्षुद्र – महान्
- खगोल – भूगोल
- खण्डन – मण्डन
- गरीब – अमीरी
- गुण – दोष
- गुरू – लघु
- गौरव – लाघव
- गौण – मुख्य/प्रमुख
- गृहस्थ – सन्याशी
- गाहय – त्याज्य
- गृहस्थ – सन्यासी
- गरिमा – लघिमा
- गुप्त – प्रकट
- गणतन्त्र – राजतन्त्र

वाक्यांश के लिए एक शब्द

- मुक्ति पाने का इच्छुक / इच्छा - मुमुक्षु/मुमुक्षा
- बार-बार युद्ध करने की इच्छा - युयुत्सा
- युद्ध की इच्छा रखने वाला - युयुत्सु
- तैरने की इच्छा - तितीर्षा
- ज्ञान प्राप्ति की इच्छा रखने वाला - जिज्ञासु
- सेवा करने की इच्छा - शुश्रूषा
- जिन्दा रहने की इच्छा - जिजीविषा
- मरने की इच्छा - मुमूर्षा
- कोई काम करने की इच्छा - चिकीर्षा
- विजय प्राप्ति की तीव्र इच्छा - विजीगिषा
- रचना करने की इच्छा - सिसृक्षा
- दक्षिण-पूर्व के बीच की दिशा - आग्नेय
- दक्षिण और पश्चिम के बीच की दिशा - नैऋत्य
- उत्तर व पूर्व के मध्य की दिशा - ईशान
- संध्या और रात्रि के बीच का समय - गोधूलि/प्रदोष
- आधीरात - निशीथ
- जिसे जीता ना सके - अजेय
- बिना वेतन काम करने वाला - अवैतनिक
- दोपहर के बाद का समय - अपराह्न
- जो अधर्म करने से डरे - धर्मभीरू
- आश्रयदाता को प्रसन्न करने के लिए ही जाने वाली झूठी-सच्ची बात - ठकुरसुहाती
- जिसने अनेक विद्वानों से विभिन्न शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त किया हो - बहुश्रुत
- हर समय दूसरों की कमियाँ ढूँढ़ने वाला - छिद्रान्वेषी
- इन्द्रियों से सम्बन्धित है वह - ऐन्द्रिय/ऐन्द्रिक
- जो ज्ञानेंद्रियों की पहुँच के बाहर हो - इन्द्रियातीत
- जिसने इन्द्रियों को वश में कर लिया हो - जितेन्द्रिय
- किसी वस्तु को पाने की नितांत इच्छा - अभीप्सा
- वह स्त्री जिसका पति परदेश से आने वाला हो - आगमिष्यत पतिका
- जिसका पति परदेश से लौटा हो - आगत पतिका
- स्त्रियों जैसे स्वभाव वाला - स्त्रैण
- सोलह वर्ष की अवस्था वाली स्त्री - षोडशी
- मरने की इच्छा - मुमूर्षा
- किसी वस्तु का चौथा हिस्सा - चतुर्थांश
- देश के प्रति भक्ति रखने वाला - देशभक्त
- हिसाब-किताब लिखने वाला - लेखपाल
- पेट से सम्बन्धित आग - जठराग्नि
- जो इस लोक से अलग हो - अलौकिक
- जो बोलने में बहुत चतुर हो - वाक्पटु
- किसी भी पक्ष का समर्थन नहीं करने वाला - निष्पक्ष
- विवाद या गुटबाजी से अलग रहने वाला - तटस्थ
- जिसकी पहले आशा नही गई - अप्रत्याशित
- जो बहुत जानकार हो - बहुज्ञ
- जिनको थोड़ा ज्ञान हो - अल्पज्ञ
- जो कुछ न जानता हो - अज्ञ
- जिसे जाना न जा सके - अज्ञेय
- जिसमें अपमान का भाव हो वह हँसी - उपहास
- अच्छाई और बुराई की पहचान का गुण - विवेक
- संदेह रहित - असंदिग्ध
- कम या नपा - तुला खर्च करने वाले - मितव्ययी
- जो सीमित क्षेत्र या ज्ञान से बाहर न जाता हो – कूपमंडूक
- जिसकी सारी इच्छाएँ तृप्त हो गई हो - पूर्णकाम
- जो विश्वास करने योग्य हो - विश्वस्त
- वह जो कम खर्च करता हो - अल्पव्ययी
- जिस लोक-प्रचलित कथन के रचनाकार का पता न हो - किंवदन्ती
- जिसकी आँखें मछली के समान हो - मीनाक्षी
- जिसे लाँघना कठिन हो - दुर्लंघ्य
- अपनी प्रशंसा करने वाला - आत्मश्लाघी
- वह कन्या जिसका विवाह होने वाला है- सौभाग्याकांक्षिणी
- स्त्री जिसका विवाह हो चुका है - सौभाग्यवती/विवाहिता

शब्द-शुद्धि

❖ सभी शब्द शुद्ध लिखे है –

- अनधिकार
- अनुसरण
- अंतः साक्ष्य
- अभ्यस्त
- स्थान
- अमरूद
- आगामी
- अंतर्धान
- अमावास्या,
- अमावस्या
- अधीन
- अश्वा
- अष्टावक्र
- आँख
- अनुकूल
- अनिष्ट
- अध्ययन
- अद्वितीय
- अहल्या
- अंत्याक्षरी
- अवनति
- अर्थात्
- अपह्नुति
- आकांक्षा
- आर्द्र
- आह्लाद
- आह्वान
- आजीविका
- आमिष
- आनुषंगिक
- अधःपतन
- आध्यात्मिक
- अत्यधिक
- आवश्यक
- आभ्यंतरिक
- असह्य
- अनुयायी
- अनाथा
- अधोगति
- अत्युक्ति
- अक्षौहिणी
- अंतःपुर
- अनधिकारी
- अजस्र
- आशीर्वाद
- अधस्तल
- आस्पद
- आविष्कार
- अंतःकरण
- अहोरात्र
- आत्मपुरुष
- अँगना
- अर्चना
- अधः पतन
- अँधेरा
- अभिष्ट
- आरोग्य
- अनुष्ठान
- अतींद्रिय
- अभयारण्य
- अभिशप्त
- अतिथि
- अधिशासी
- अनूदित
- अक्षुण्ण
- अनभिज्ञ
- अनुगृहित
- द्वारका
- अभिषेक
- अंधाधुंद
- आत्मोन्नति
- इकट्ठा
- ईर्ष्या
- इतः पूर्व
- इकतारा
- इकलौता
- ईंधन
- एकत्र
- ऐतिहासिक
- ऐक्य
- एकता
- ऐन्द्रजालिक
- ऐच्छिक
- ऐश्वर्य
- उपर्युक्त
- उत्पात
- उज्ज्वल
- उपलक्ष्य
- उन्मीलित
- उच्छृंखल
- ऊँचाई
- उन्नति
- उद्योगीकरण
- उत्कर्ष
- उत्तरदायी
- उच्छ्वास
- उच्चैः श्रवा
- उँगली
- ऊँचा
- उन्नतिशील
- उज्जयिनी
- उत्पत्ति
- उषा
- उच्छिष्ट
- ऊर्जा
- ऊर्जस्वित
- कंकण
- कालिदास
- कलश
- कैलास
- कार्यक्रम
- क्यारी
- कौतूहल
- कुतूहल
- कवयित्री
- कुशासन
- कनिष्ठ
- कृशांगी
- कृतकृत्य
- कन्हैया
- केंद्रीकरण
- कौशल
- कुशलता
- कोमलांगी
- कष्ट
- किंवदंती

वाक्य शुद्धि

❖ अनावश्क शब्द के कारण वाक्य अशुद्धि –

- अशुद्ध – मैं प्रातः काल के समय पढ़ता हूँ।
- शुद्ध – मैं प्रातः काल पढ़ता हूँ।
- अशुद्ध – जज ने उसे मृत्यु दण्ड की सजा दी।
- शुद्ध – जज ने उसे मृत्यु दण्ड दिया।
- अशुद्ध – इसके बाद फिर क्या हुआ?
- शुद्ध – इसके बाद क्या हुआ?
- अशुद्ध – यह कैसे सम्भव हो सकता है?
- शुद्ध – यह कैसे संभव है?
- अशुद्ध – मेरे पास केवल मात्र एक घड़ी है।
- शुद्ध – मेरे पास केवल एक घड़ी है।
- अशुद्ध – तुम वापस लौट जाओ।
- शुद्ध – तुम वापस जाओ।
- अशुद्ध – सारे देश भर में यह बात फैल गई।
- शुद्ध – सारे देश में यह बात फैल गई।
- अशुद्ध – वह सचिवालय कार्यालय में लिपिक है।
- शुद्ध – वह सचिवालय में लिपिक है।
- अशुद्ध – किसी और दूसरे से परामर्श लीजिए।
- शुद्ध – किसी और से परामर्श लीजिए।
- अशुद्ध – सप्रमाण सहित उत्तर दीजिए।
- शुद्ध – सप्रमाण उत्तर दीजिए।
- अशुद्ध – गुलामी की दासता बुरी है।
- शुद्ध – गुलामी बुरी है।
- अशुद्ध – प्रशान्त बहुत सज्जन पुरुष है।
- शुद्ध – प्रशान्त बहुत सज्जन है।
- अशुद्ध – शायद आज वर्षा अवश्य आयेगी।
- शुद्ध – शायद आज वर्षा आयेगी।
- अशुद्ध – शायद वह जरूर उत्तीर्ण हो जायेगा।
- शुद्ध – वह जरूर उत्तीर्ण हो जायेगा।
- अशुद्ध – कृपया शीघ्र उत्तर देने की कृपा करें।
- शुद्ध – कृपया शीघ्र उत्तर दें।
- अशुद्ध – विन्ध्याचल पर्वत हिमालय से प्राचीन है
- शुद्ध – विन्ध्याचल हिमालय से प्राचीन है।
- अशुद्ध– नौजवान युवक युवतियों को आगे आना चाहिए
- शुद्ध – नौजवानों को आगे आना चाहिए।
- अशुद्ध – वह गुनगुने गरम पानी से नहाता है।
- शुद्ध – वह गुनगुने पानी से नहाता है।
- अशुद्ध – गरम आग लाओ।
- शुद्ध – आग लाओ।
- अशुद्ध – ठंडा बर्फ लाओ।
- शुद्ध – बर्फ लाओ।
- अशुद्ध – तुम सबसे सुन्दरतम हो।
- शुद्ध – तुम सबसे सुन्दर हो।
- अशुद्ध – उसे लगभग शत प्रतिशत अंक मिले।
- शुद्ध – उसे शत प्रतिशत अंक मिले।
- अशुद्ध – वह विलाप करके रोने लगी।
- शुद्ध – वह विलाप करने लगी।
- अशुद्ध – कई वर्षों तक भारत के गले में गुलामी की बेड़ियाँ पड़ी रहीं।
- शुद्ध – कई वर्षों तक भारत के पैरों में गुलामी की बेड़ियाँ पड़ी रहीं।
- अशुद्ध – तरुण नवयुवकों की शिक्षा का अच्छा प्रबंध होना चाहिए।
- शुद्ध – नवयुवकों की शिक्षा का अच्छा प्रबंध होना चाहिए
- अशुद्ध – वह पानी से पौधों को सींचता है।
- शुद्ध – वह पौधों की सींचता है।
- अशुद्ध – देश की वर्तमान मौजूदा हालत ठीक नहीं है
- शुद्ध – देश की वर्तमान हालत ठीक नहीं है।
- अशुद्ध – दासता युक्त गुलामी का जीवन ठीक नहीं
- शुद्ध – दासता युक्त जीवन ठीक नहीं।

❖ अनुपयुक्त शब्द के कारण वाक्य अशुद्धि –

- अशुद्ध – सीता राम की स्त्री थी।
- शुद्ध – सीता राम की पत्नी थी।
- अशुद्ध – रातभर गधे भौंकते रहे।
- शुद्ध – रातभर कुत्ते भौंकते रहे।
- अशुद्ध – कोहिनूर एक अमूल्य हीरा है।
- शुद्ध – कोहिनूर एक बहुमूल्य हीरा है।
- अशुद्ध – बन्दूक एक शस्त्र है।
- शुद्ध – बन्दूक एक अस्त्र है।

काल

- क्रिया के उस रूपान्तरण को, जिससे क्रिया के व्यापार का समय तथा उसकी पूर्ण अथवा अवस्था का बोध होता है, उसे काल कहते हैं।
- समय के प्रति मानसिक बोध काल कहलाता है।

● काल मुख्यत: तीन प्रकार के होते है –

1. **भूतकाल**
2. **वर्तमानकाल**
3. **भविष्यत्काल**

(1) भूतकाल –

- क्रिया के व्यापार की समाप्ति बतलाने वाले रूप को भूतकाल कहते है –

● भूतकाल के 6 उपभेद होते हैं –

(i) सामान्य भूतकाल – जब क्रिया के व्यापार की समाप्ति सामान्य रूप से बीते हुए समय में होती है, किंतु इससे यह पता नहीं चलता कि क्रिया समाप्त हुए थोड़ी देर हुई है या अधिक, वहाँ सामान्य भूतकाल होता है।

◆ उदाहरण –

- शिवलाल ने गाना गाया।
- हमने एक शेर देखा।
- सुमन घर गयी।
- रोहित ने पुस्तक पढ़ी।

(ii) आसन्न भूतकाल– सामान्य भूत के क्रिया रूप के साथ 'है' के योग से आसन्न भूत का रूप बन जाता है।

◆ उदाहरण –

- शिवलाल ने गाना गाया है।
- सुमन घर गयी है।
- रोहित ने पुस्तक पढ़ी है।

(iii) पूर्ण भूतकाल – क्रिया के जिस रूप से यह प्रकट होता है कि क्रिया व्यापार बहुत समय पहले समाप्त हो गया था। यहाँ सामान्य भूत क्रिया के साथ 'था', 'थी', 'थें', लगने से काल पूर्ण भूत बन जाता है।

◆ उदाहरण –

- देवीलाल बाड़मेर गया था।
- निशा ने गाना गाया था
- मैं तो कब का अपना काम कर चुका था।
- मैं आवश्यक कार्य से जोधपुर गया था।

(iv) अपूर्ण भूतकाल – क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि उसका व्यापार भूतकाल में अपूर्ण रहा अर्थात् निरन्तर चल रहा था तथा उसकी समाप्ति का पता नहीं चलता है, वहाँ अपूर्ण भूत होता है।

- इसमें क्रिया के साथ रहा है, रही है, रहे हैं या ता था, ती थी, ते थे आदि आते हैं।

◆ उदाहरण –

- रवि उपन्यास पढ़ता था।
- बालक सो रहा था।
- ज्योति गाना गा रही थी।
- किसी जगह कथा होती थी।

(v) संदिग्ध भूतकाल – क्रिया के जिस भूतकालिक रूप से उसके कार्य व्यापार होने के विषयों में सदेंह प्रकट हो, उसे संदिग्ध भूत कहते हैं। (सामान्य भूत की क्रिया + 'होगा', 'होगी, 'होगें'= संदिग्ध भूत)

◆ उदाहरण –

- प्रिंस घर गया होगा।
- तुमने गाया होगा।
- वह चला होगा।
- मंजु खाना बना रही होगी।
- अंकित गया होगा।

(vi) हेतु हेतुमद् भूतकाल –

- भूतकालिक क्रिया का वह रूप, जिससे भूतकाल में होने वाली क्रिया का होना किसी दूसरी क्रिया के होने पर अवलंबित हो, वहाँ हेतु हेतुमद् भूत होता है।
- इस रूप में दो क्रियाओं का होना आवश्यक है तथा क्रिया के साथ ता, ती, ते लगता है।

मुहावरे

- अंक भरना - स्नेहपूर्वक गले मिलना
- अंग-अंग ढीला होना - बहुत थक जाना
- अंगारे उगलना - क्रोध में कटु वचन कहना
- अंगारों पर पैर रखना - जोखिम मोल लेना
- अंधा बनना - जानते हुए भी ध्यान न देना
- अक्ल का दुश्मन होना - मूर्ख होना
- अक्ल के घोड़े दौड़ना - केवल कल्पनाएँ करना।
- अपना उल्लू सीधा करना - अपना स्वार्थ सिद्ध करना
- अपना सा मुँह लेकर रह जाना - किसी अकृत कार्य के कारण लज्जित होना
- अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना - अपना नुकसान स्वयं करना
- अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना - अपनी प्रशंसा स्वयं करना
- आँखें खुलना - सजग या सावधान होना
- आँखों से पर्दा उठ जाना - असलियत का पता लगना
- आँखें चार होना - आमना — सामना होना
- आखें चुराना - नजर बचाना
- आँच न आने देना - जरा भी कष्ट न आने देना
- आँखें में धूल झोंकना - धोखा देना
- आँखों का तारा - अत्यन्त प्यारा
- आँखें बिछाना - प्रेमपूर्वक स्वागत करना
- आकाश के तारे तोड़ना- असंभव कार्य को अंजाम देना
- आग बबूला होना - अत्यधिक क्रोध करना
- आग में घी डालना - क्रोध को बढ़ावे का कार्य करना
- आटे-दाल का भाव मालूम होना - जीवन के यथार्थ को जानना
- आग लगने पर कुआँ खोदना - मुसीबत के समय उपाय खोजना
- आस्तीन काप साँप होना - कपटी/विश्वासघाती मित्र
- इतिश्री होना - अंत या समाप्त होना
- इधर-उधर की हाँकना - व्यर्थ की बातें करना
- इधर - उधर की लगाना - चुगली करना
- ईट का जबाव पत्थर से देना - करारा जबाव देना
- ईट से ईट बजाना - कड़ा मुकाबला करना
- ईद का चाँद होना - बहुत दिनों बाद दिखना
- उड़ती चिड़िया पहचानना - थोड़े इशारे में ही सब कुछ समझ लेना / कुशाग्रबुद्धि होना
- उल्टी गंगा बहाना - रीति विरुद्ध कार्य करना
- एक आँख से देखना - समदृष्टि या समभाव होना
- कमर कसना - तैयार होना
- कलैजा ठंडा होना - मन को शांति मिलना
- कागजी घोड़े दौड़ना - केवल कागजी कार्रवाई करना
- काठ का उल्लू होना - महामूर्ख होना, वज्र मूर्ख
- कान खड़े होना - चौकन्ना होना
- कलेजे पर साँप लौटना - ईर्ष्या करना
- कूच करना - चले जाना
- कुँआ खोदना - कठिन परिश्रम करना
- कान का कच्चा होना - जल्दी किसी के बहकावे में आना
- कान पर जूँ तक न रेंगना - कोई असर न पड़ना
- कंधे से कंधा मिलाना - साथ देना
- कन्नी काटना - आँख बचाकर निकलना
- कुँए में भांग पड़ना - सबकी मति भ्रष्ट होना
- किला फतेह करना- कठिन कार्य में सफलता प्राप्त करना
- खाल खींचना - बहुत मारना
- खेत रहना - युद्ध में मारे जाना / शहीद हो जाना
- खाक में मिलना - नष्ट होना
- खून खौलना - अत्यधिक क्रोध आना
- खून - पसीना एक करना - कठोर परिश्रम करना
- खटाई में पड़ना - कार्य में व्यवधान आना
- गड़े - मूर्दे उखाड़ना - पुरानी बातें करना
- गागर में सागर भरना - थोड़े शब्दों में बुहत कुछ कह देना
- गाल बजाना - बढ़—चढ़कर बातें करना/डींग मारना
- गुड़ गोबर करना - बना कार्य बिगाड़
- गुस्सा पीना - क्रोध रोकना
- गीत गाना - प्रंशसा करना
- गुलर का फूल होना - दुर्लभ वस्तु / लापता होना
- गिरगिट की तरह रंग बदलना - अवसरवादी होना
- गाँठ बाँधना - स्थायी रूप से याद रखना
- गूदड़ी का लाल होना - गरीबी में भी गुणवान होना

लोकोक्तियाँ

- आँख का अन्धा नाम नयन सुख – नाम और गुण में अन्तर होना।
- आठ कनौजिये नौ चूल्हे – सबका पृथक्–पृथक् मार्ग पर चलना।
- आम के आम गुठलियों के दाम – दोनों ओर से लाभ मिलना।
- आधा तीतर आधा बटेर – पूर्णता नहीं होना – अनमेल योग।
- अपनी पगड़ी अपने हाथ – अपना सम्मान अपने हाथ में रहता है।
- एक अनार सौ बीमार – वस्तु कम और चाहने वाले अधिक।
- एक तो करेला फिर नीम चढ़ा –दुष्ट व्यक्ति का कुसंग में और पड़ जाना।
- एक और एक ग्यारह होते हैं – संगठन में शक्ति होती है।
- अक्ल के पीछे लट्ठ लिए फिरना – मूर्खता दिखाना।
- आ बैल मुझे सींग मार – जान बूझकर मुसीबत में फँसना।
- आई मौज फकीर की दिया झोंपड़ा फूँक – विरक्त व्यक्ति संसार के प्रति निर्मोही।
- उल्टे बाँस बरेली का – विपरीत आचरण करना।
- इस हाथ दे उस हाथ ले – परिणाम तुरन्त ज्ञात होना।
- का वर्षा जब कृषि सुखाने – अवसर बीत जाने पर साधन किस काम का ?
- कर ले सो काम भज ले सो राम – कार्य को तुरन्त कर लेना ही अच्छा रहता है।
- कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली – अत्यधिक अन्तर होना।
- काजी जी दुबले क्यों, शहर का अन्देशा – दुसरों की चिन्ता से पीड़ित रहना।
- काठ की हाँडी एक बार ही चढ़ती है – कपट व्यवहार बार–बार नहीं चलता।
- काबुल में क्या गधे नहीं होते – अच्छे समाज में भी मूर्ख होते हैं।
- काला अक्षर भैंस बराबर – निरक्षर (अनपढ)
- खेती खसम सेती – कार्य या व्यापार मालिक ही चला सकता है।
- खिसियानी बिल्ली खम्भा नोंचे – लज्जित होकर क्रोध प्रकट करना।
- गवाह चुस्त मुद्दई सुस्त – स्वयं अपना काम न करे, दूसरे उसके लिए प्रयत्न करें।
- गुड़ खाय गुलगुलों से परहेज करे – दिखावटी विरोध प्रकट करना।
- गधा खेत खाय जुलाहा मारा जाय – अपराध किसी का, दण्ड किसी को
- घर–घर मिट्टी के चूल्हे हैं – सभी समान रुप से खोखले हैं।
- चोरी और सीनाजोरी – अपराध करके अकड़ना।
- चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात – थोंड़े समय का सुख।
- चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय – अत्यधिक कंजूस।
- चुपड़ी और दो दो – लाभ पर लाभ होना।
- चिराग तले अन्धेरा – पर उपदेश पर स्वयं अज्ञानी।
- चौबेजी बनने गए छब्बे, दुब्बेजी रह गए – लाभ के लिए प्रयत्न करना और हानि हो जाना।
- छोटे मुँह बड़ी बात – अपनी हैसियत से बढ़कर बातें करना।
- जो गरजते हैं वे बरसते नहीं – बातूनी लोग केवल दिखावा करते हैं।
- जाकै पैर न फटी बिवाई, वह क्या जाने पीर पराई – दुख भोगे बिना दुख के स्वरुप का ज्ञान नहीं होता।
- जंगल में मोर नाचा किसने देखा – बिना देखे किसी के गुणों का पता नहीं लगता ।
- टेढ़ी उँगली किए बिना घी नहीं निकलता – सीधेपन से काम नहीं चलता।

पारिभाषिक शब्दावली

- AREA क्षेत्र/अंचल
- ABILITY योग्यता
- ABILITY PROFILE योग्यता आरेख
- ABANDONMENT त्याग, छोड़ना, परित्याग
- ABEYANCE स्थगन, अस्थायी रोक
- ACADEMIC शैक्षणिक
- ACADEMY अकादमी
- ACT अधिनियम
- ACKNOWLEDGMENT पावती पर्ची/प्राप्ति रसीद
- ACCEPTABILITY स्वीकार्यता
- ACCEPTANCE स्वीकृति
- ACCESS पहुँच
- ACCOUNTABILITY उत्तरदायित्व
- ACQUIRE अधिग्रहण/अवाप्त करना
- ACCELERATION त्वरण
- ACQUIT दोषमुक्त करना
- ACCIDENT दुर्घटना
- ADMISSIBLE सकारात्मक
- ADHOC तदर्थ
- ADJOURN स्थगित करना
- ADVICE सलाह
- ADVERSE अनुकूल
- ADVOCATE अधिवक्ता
- ADVOCATE GENERAL महाधिवक्ता
- AGENT अभिकर्ता
- AGROIMPLEMENTS कृषि उपकरण
- AGGREGATE कुल योग
- AGRARIAN कृषि भूमि संबंधी
- AGENDA कार्यसूची
- ALLEGATION आरोप
- ALLOTMENT आवंटन
- ANNUITY वार्षिकी
- ANNUAL वार्षिक
- ANCILLARY सहायक, आनुषांगिक
- ANTECEDENTS पूर्वगामी
- APPRENTICE प्रशिक्षु
- APPLICATION आवेदन
- APPLICANT आवेदक
- APPEAL अनुरोध
- APPROVAL अनुमोदन
- APPROACH पहुँच, उपमार्ग
- APPEAR उपस्थित होना, शामिल
- APPENDIX परिशिष्ट
- APPARENT प्रकट
- APPEASEMENT तुष्टीकरण
- APPROPRIATION विनियोजन
- ARREARS बकाया
- ASSENT अनुमति
- CONSERVATION संरक्षण
- ASSUME कल्पना, अनुमान
- ATTACHMENT कुर्की
- AUTHORITY अधिकरण, अधिकारी
- AUDIT अंकेक्षण
- AUDITING लेखापरीक्षण
- AUTHENTIC प्रामाणिक
- AUTHENTICATION प्रमाणीकरण
- AUTONOMOUS स्वायत्त
- AUTHORISE प्राधिकार देना
- AUTHORITY अधिकरण, लेखकीय अधिकार
- AWARD पुरस्कार अधिनिर्णय, पंचाट
- BAD CONDUCT दुर्व्यवहार, दुराचार
- BALLOT मत पत्र
- BAIL जमानत
- BUREAUCRACY अधिकारी तंत्र

पत्र - लेखन

- पत्र लेखन एक कला है।
- एक अच्छे पत्र में सरलता, संक्षिप्तता, प्रभावशीलता, स्पष्टता, सम्पूर्णता, बाह्य सज्जा, विनम्रता, विचारो में क्रमबद्धता होनी चाहिए।

● पत्र की बाह्य सज्जा –

1. कागज अच्छा हो।
2. लिखावट सुन्दर व स्पष्ट हो।
3. पत्र त्रुटि रहित हो।
4. विराम चिह्नों का उचित प्रयोग।
5. तिथि, अभिवादन, अनुच्छेद का उचित प्रयोग।

- सरकारी पत्रों में सामान्यतः 'महोदय' सम्बोधन का प्रयोग किया जाता हैं।

कार्यालयी – पत्र

- कार्यालयी या सरकारी पत्र से हमारा अभिप्राय ऐसे पत्र से है, जो किसी सरकारी पदाधिकारी द्वारा सरकारी उद्देश्य की पूर्ति हेतु किसी अन्य सरकारी पदाधिकारी या कर्मचारी अथवा किसी गैर–सरकारी व्यक्ति, फर्म या संस्था को लिखे जाते हैं।
- सरकारी पत्र कई प्रकार के होते हैं जिनमें सामान्य सरकारी पत्र, अधिसूचना, परिपत्र, ज्ञापन–पत्र (स्मरण पत्र), विज्ञप्ति, अनुस्मारक, अर्द्ध सरकारी पत्र, कार्यालय आदेश आदि प्रमुख हैं। हर सरकारी पत्र अपने निश्चित प्रारूप में ही लिखा जाता है।
- कार्यालयी पत्र में सबसे ऊपर विभाग का नाम लिखा जाता है।
- कार्यालयी पत्र का मसौदा लिखते हुए सबसे ऊपर पत्र क्रमांक संख्या का उल्लेख किया जाता है।
- कार्यालयी पत्र के अधोलेख में विभाग का नाम, स्थान का उल्लेख, पदनाम होता है, जबकि व्यक्तिगत नाम नही लिखा जाता है।
- कार्यालयी पत्र में पत्रांक व दिनांक का प्रयोग होता है।
- कार्यालयी पत्र का पृष्ठांकन किया जाता है।
- ये पत्र उद्देश्यपूण, प्रभावोत्पादकता से युक्त होना चाहिए
- कार्यालयी पत्र की भाषा शिष्ट व औपचारिक होनी चाहिए।
- हाशिये से थोड़ा हटकर प्रेषिति को संबोधित किया जाता है।

● प्रारूप – सामान्य कार्यालयी पत्र

राजस्थान सरकार
जिला कलैक्टर कार्यालय, चूरू

पत्र क्रमांक : जिका/चू/2015/10 दिनांक 2 जून 2015

प्रेषक :
जिला कलैक्टर
चूरू

प्रेषित / सेवा में,
राजस्व सचिव
राजस्व विभाग
राजस्थान सरकार
जयपुर।

विषय – ....

महोदय,

....
....
....विवरण...
....

भवदीय
हस्ताक्षर
जिला कलैक्टर
चूरू

- मूल पत्र की प्रतिलिपि किसी विभाग को प्रेषित की जाती है, उसे पृष्ठांकन कहते है।
- कार्यालयी पत्रों में सरलता, स्पष्टता व संक्षिप्तता हो।
- इनके अंत में भवदीय, निवेदक, प्रार्थी शब्द आते है
- इनमें चिह्नांकन व अनुच्छेद का प्रयोग समुचित हो।

Notes

हमारे प्रकाशन की अन्य पुस्तकें

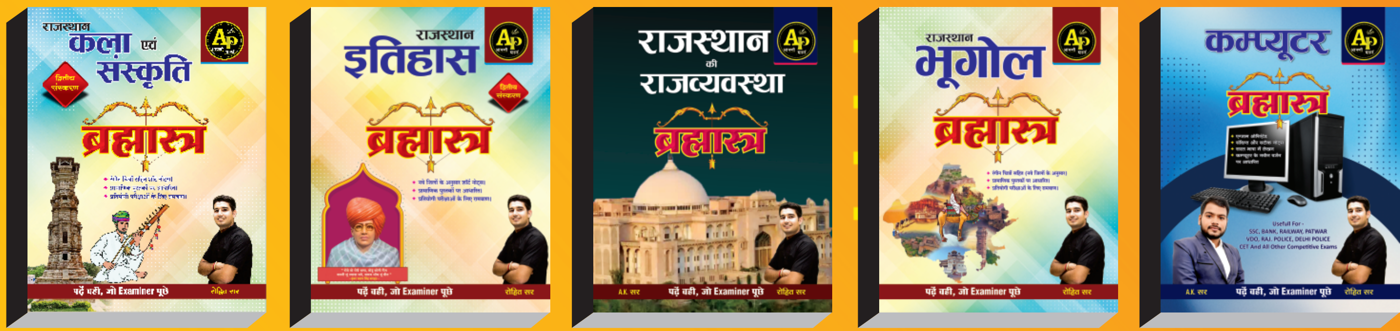

प्रतियोगी परीक्षा की सर्वश्रेष्ठ तैयारी कीजिए

Apni Padhai app

के साथ

Expert Faculties

Hand Writing Notes

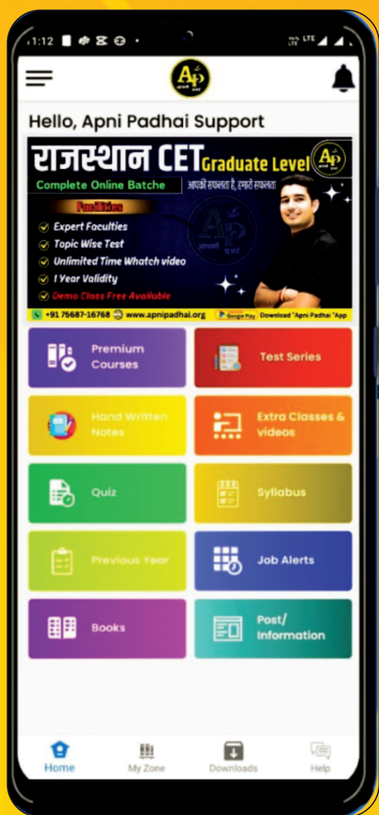

Live Doubt Sessions

Topic Wise Test

Unlimited Time Whatch Video

Recorded Lectures

Apni Padhai Publication

किसी भी जानकारी की लिए WhatsApp, Call करें- +91 75-68-71-67-68

Fix Rate MRP : 90 /-